❍ Year : 4 ❍ Issue : 15 ❍ January 2020 ❍ ISSN : 2456-0898

GLOBAL THOUGHT

ग्लोबल थॉट

(MULTI DISCIPLINE MULTI LANGUAGE RESEARCH JOURNAL)

(An International Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal)

Special Note :

Anti National Thoughts are not acceptable.

Patron :

Prof. M.M. Agrawal

(Former Dean, Arts Faculty & H.O.D. Sanskrit, University of Delhi, Delhi)

Prof. D.S. Chauhan

(Former H.O.D. Sanskrit, Magadh University, Bodhgaya, Bihar)

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक रूपेश कुमार चौहान द्वारा 47, ए-3 ब्लॉक, गली नं. 5, धर्मपुरा एक्सटेंशन, (नजदीक संकट मोचन मंदिर), पी.एस. नजफगढ़, दिल्ली से प्रकाशित एवं डॉल्फिन प्रिंटोग्राफिक्स, 4 ई/7, पाबला बिल्डिंग, झंडेवालान् एक्सटेंशन, नई दिल्ली में मुद्रित।

सम्पादक-रूपेश कुमार चौहान

Ph. 09555222747, 9267944100, 9555666907

अनुक्रमणिका

Editorial ---------- 9

Coalition Politics in India and Problem of Prime Minister ---------- 10
Dr. Ravi Kant Pandey

The East - West Conflict ---------- 15
Purnima Priyadarshi

Investigate some Personality Characteristics of Mahadalit and Dalit High School Students ---------- 18
Bandana Kumari

बेरोजगारी दूर करने में राष्ट्रीय रोजगार गारंटी योजना (NREGA) की भूमिका 25
डॉ. रंजु कुमारी

Crumbling India and the Impact on Sustainable Development Goals ---------- 29
Ravi Kumar

वैश्वीकृत भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में निर्यात की भूमिका 38
डॉ. चन्द्रमणि प्रसाद

Growing Trend of Corruption in Indian Bureaucracy and its Consequences --------- 42
Dr. Ravi Kant Pandey

Scaling of Mahadalit and Dalit High School Students ---------- 46
Bandana Kumari

शिक्षण का सत्य 52
डा. प्रीति शुक्ला

सूरकाव्य में कृष्ण का ऐश्वर्य रूप 55
रिंकु कुमारी

संस्कृत भाषा और मन्त्र साहित्य का अन्तर्सम्बंध . 58
डॉ. ललन कुमार पाण्डेय

भारत के नवनिर्माण में जननायक कर्पूरी ठाकुर की भूमिका 64
रीता कुमारी

Domestic Violence : Causes and Solution -- 67
Dr. Shobha Kumari

Inflation Causes and Effects ---------- 71
Mayank Kumar

प्रेमचन्द के उपन्यासों में समकालीन सामाजिक समस्याएँ 73
विनीता कुमारी

हिन्दी पद्य साहित्य में नारी विमर्श 75
स्मिता कुमारी

A Study of Tribes in India ---------- 78
Dr. Tungnath Mauar

अशोक के अभिलेखों में प्रतिबिम्बित बौद्ध धर्म का स्वरूप 82
डॉ. हरिओम कुमार

A Hidden Challenge: Child Labour in Bihar 85
Dr. Raghvendra Kumar

औपनिवेशिक दौर में अनुवाद परम्परा की भूमिका 89
डॉ. शोभा कौर

तृष्णा के अन्य पर्याय 93
श्रीमति रेणु कुमारी

Development and Bureaucracy in India ---- 97
Dr. Poonam Kumari

Young Women Empowerment 101
Dr. Shobha Kumari

A Report of MGNREGA Women Participation and Livehoods Changes in Bihar 104
Madhurendra Singh

John Braine and His World (1922-1986) ... 109
Dr. Rajendra Prasad Singh

Child Labour in Bihar: A Study of Saharsa District of Bihar 114
Dr. Jaykant Kumar

दिल्ली चुनाव 2020 और आम आदमी पार्टी के राजनीतिक प्रयोग पर चर्चा 118
डॉ. संजय कुमार

भारत में नक्सलवाद के विकास का अवलोकन121
डॉ. प्रिंसी प्रिया राय

आश्रम व्यवस्था के अंतिम चरण के रूप में संन्यास आश्रम की महत्ता 126
डॉ. संजीव प्रकाश

महाजनपद काल से मौर्योत्तर काल तक के बौद्ध साहित्यों में वर्णित नारियों की स्थिति 130
मधुलिका सिन्हा
आधुनिक भारत में दलित चेतना के विकास में अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन - एक विश्लेषण 134
गायत्री सिन्हा
बिहार कृषि प्रगति की ओर 138
डॉ. मंजु कुमारी सिन्हा
नियोजित शिक्षकों की आवश्यकता : सामाजिक या राजनीतिक 141
धर्मवीर प्रसाद
Harappan Civilization: Weapons and it's Implementation ----------145
Rita Kumari
The role of mother to get rid of the child's habit of urinating in bed and analysis of mother's contribution in all round development of a children ----------152
Dr. Meena Kumari
Effect of Stone Crusher Dust Pollution on Agroecosystem i.e. Maize (Zea mays) -----154
Ramawadhesh Kumar, Pramod Kumar
आधुनिक सन्दर्भ में योग दर्शन 159
डॉ. रश्मि कुमारी
Zen Meditation in Mahayana Buddhism - 162
Tran Thi My Dung
Study of Feminine Silence and Surrender in Shashi Deshpande's Novel ----------167
Dr. Mahesh Kumar
Terrain Characteristics And Agricultural Land Use in Muzaffarpur District, Bihar ---------173
Soni Kumari
Vasudhaiva Kutumbakam: An African Experience ----------176
Manish Karmwar
रामचरित मानस : एक वैज्ञानिक अध्ययन..... 186
डॉ. पंकजेन्द्र किशोर
Conflict in Africa and the Role of African Union ----------191
Vaibhav Vishal & Jayverdhan Kumar
The Momin Conference': A movement of lower caste Muslims ----------198
Mohsina Khatoon
ज्योतिराव फुले की लेखनी का केंद्रीय तत्व गुलामी से मुक्ति का रास्ता दिखाना..... 203
संजीव कुमार
Adjustment of students in school ----------207
Supriya Kumari
Effect of Health Adjustment Problems of Working Women ----------211
Dr. Rubi Kumari
अर्द्धघुमन्तु रायका (रैबारी) जाति एवं स्थानिक गतिशीलता राजस्थान के विशेष संदर्भ में एक शोध परक अध्ययन..... 213
डॉ. भूरसिंह जाटव
बौद्ध धर्म के तीर्थ स्थलों में पर्यावरणीय संरक्षण एवं व्यापारियों का योगदान 225
डॉ. भारती कुमारी
'दिनकर' की समता का विभिन्न आयाम..... 230
डॉ. वीरेन्द्र कुमार दत्ता
बौद्ध-धर्म के परिप्रेक्ष्य में महाभिनिष्क्रमण की अवधारणा 234
डा. दीपा झा
महाभोज : समकालीन राजनीति में मूल्यहीनता एवं अवसरवादिता 237
कुणाल भारती
सृष्टि प्रक्रिया की वैज्ञानिक अवधारणा 240
डा. मृत्युञ्जय कुमार
वेदान्ते विधिविचारः 245
सचिन द्विवेदी
Dharma and Hindutva ----------248
Dr. Shweta Satyam
नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक चेतना 254
अभय कुमार
''जानकीजीवनम्'' महाकाव्य के उत्पाद्य कथा आधार 257
डॉ. राधा कान्त तिवारी
औपनिवेशिक भारत और विऔद्योगीकरण की प्रक्रिया 261
अभिषेक प्रियदर्शी
Cultural Heritage of Indian Poetry in English ----------264
Dr. Shashi Bhushan Kumar

शोध-पत्र

औपनिवेशिक दौर में अनुवाद परम्परा की भूमिका

डॉ. शोभा कौर

जब भी कोई देश किसी दूसरे देश को उपनिवेश बनाता है तो, 'अनुवाद' को हमेशा एक हथियार के रूप में प्रयोग में लाता है जिससे एक तरफ तो वह उस देश की भाषा, साहित्य और संस्कृति को समझने का प्रयास करता है तो दूसरी तरफ अनुवाद के माध्यम से अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति और धर्म के वर्चस्व को स्थापित करने की कोशिश करता है, तथा उपनिवेश देश को असभ्य, गंवार और बर्बर साबित करने की कोशिश करता है। अंग्रेजों ने भारत के साथ इसी औपनिवेशिक नीति को हथियार बना कर भारतीय संस्कृति को विकृत करने का प्रयास किया।

ऐसे में प्रश्न उठता है कि उपनिवेशकालीन भारतीय अनुवाद परम्परा किस प्रकार की थी? उस समय भारतीय लेखकों का क्या रवैया था? प्राच्यवादियों ने भारतीय ग्रन्थों के अनुवाद करते हुए क्या घालमेल किये? क्या भारतीय लेखकों ने प्रतिरोध में किस प्रकार के ग्रन्थों को रचा? भारत में राष्ट्रवाद के प्रारम्भिक युग में हिंदी लेखकों का क्या योगदान रहा? इन सब मुद्दों के बीच जो बात नजरअंदाज कर दी जाती है वह यह कि भारत से विश्व ने क्या ग्रहण किया?

उपनिवेशकालीन भारत की अनुवाद परम्परा को विकसित करने वाले दो वर्ग हैं–1. भारतीय 2. अंग्रेज

इन वर्गों द्वारा अनुवाद की चार धाराएँ विकसित हुई थ

1 अंग्रेजी ग्रन्थों का आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद

2 संस्कृत ग्रन्थों का आधुनिक भारतीय भाषाओं में अनुवाद

3 आधुनिक भारतीय भाषाओं की रचनाओं का परस्पर अनुवाद।

4. भारतीय भाषाओं खासकर तमिल, संस्कृत की रचनाओं एवं महत्वपूर्ण शास्त्रों का अंग्रेजी एवं जर्मन भाषा में अनुवाद।

शासन सत्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए सन 1800 में भारत के कोलकत्ता शहर में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई। यह कॉलेज लार्ड वेलेजली का सपना था जिसका उद्देश्य भारतीय ज्ञान को समझना, सीखना और जानना था। पहली बार अंग्रेजी व्यवस्था को यह महसूस हुआ कि यदि हम भारत के ज्ञान और शिक्षा का अध्ययन कर लें तो हम ज्यादा प्रभावी एवं लम्बे समय तक शासक रह पाएंगे। यह पहला स्कूल था जहाँ व्यापक स्तर पर भारतीय भाषाओं का अनुवाद तेजी से होने लगा। इसमें भारतीय भाषाओं का अंग्रेजी अनुवाद और अंग्रेजी साहित्य का भारतीय भाषाओं में अनुवाद होने लगा। छापेखाने के विकास से प्राचीन ग्रन्थों को संरक्षित किया गया पर धीरे धीरे अनुवाद परम्परा अंग्रेजी तक सीमित हो गई।

प्रत्येक अनुवाद आत्मसातीकरण की प्रक्रिया कार्य करती है। औपनिवेशिक अनुवाद (प्राच्यवादी अनुवादक) भारतीय समाज, कानून, इतिहास, संस्कृति, साहित्य, परम्परा और चेतना को आत्मसात करने का यत्न बड़े व्यापक स्तर पर किया गया और वह अनुवाद उपनिवेशवादियों की धारणाओं से प्रेरित होकर हमारी अस्मिता का विरूपित चेहरा पेश कर रहा था। दुखद यह है कि अधिकांश भारतीय शिक्षित लोग उन अनुदित पाठों को भारतीय कानून, दर्शन और साहित्य आदि के ज्ञान का मूल स्त्रोत समझने लगे। इस प्रकार भारत की छवि अनुदित अस्मिता की बन गई। यहाँ तक कि वे उन पाठों के माध्यम से

Peer Reviewed Refereed Journal • ISSN : 2456-0898